कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MHD–22

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)
(एम. एच. डी.)
सत्रांत परीक्षा
दिसम्बर, 2023
एम.एच.डी.–22 : कबीर का विशेष अध्ययन

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

***नोट : प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) काहे री नलनी तूँ कुम्हिलाँनी
तेरे ही नालि सरोवर पानी॥
जल मैं उतपति जल में बास, जल में नलनी तोर निवास॥
ना तलि तपति न ऊपरि आगि, तोर हेतु कहु कासनि लागि॥
कहै कबीर जे उदिक समान, ते नहीं मूए हँमरें जान॥

(ख) अवधू ऐसा ग्याँन बिचारी
ताथै भई पुरिष चैं नारी॥

ना हूँ पसी नाँ हूँ क्वारी पूत जन्यूँ द्यौ हारी।

काली मूँड कौ एक न छोड़यो, आजहूँ अकन कुवारी॥

वाम्हन कै बम्ह्वेटी कहियौं, जोगी के घरि चेली।

कलमा पढ़ि पढ़ि भई तुरकनी, अजहूँ फिरैं अकेली॥

पीहरि जाँउँ न सासुरौ, पुरषहि अंगि न लाँऊँ।

कहै कबीर सुनहु रे संतौ, अंगहि डांग न छुवाँउँ॥

(ग) देखत नैन चल्या जग जाई॥

इक लख पूत सवा लाख नातो, ता रावन घरि दिया न बाती॥

लंका सी कोट समंद सी खाईं, ता रावन की खबरि न पाई॥

आवत संग न जात संगाती, कहा भयौ दरि बाँधे हाथी॥

कहै कबीर अंत की बारी, हाथ झाड़ि जैसे चले जुवारी॥

(घ) पंडित बाद बदंते झूठा।

राम कहयाँ दुनिया गति पावै, षाँड कहयाँ मुख मीठा॥

पावक कहयाँ पाव जे दाझैं, जल कहि त्रिषा बुझाई।

भोजन कहयाँ भूष जे भाजै, तौ सब कोई तिरि जाई॥

नरक कै साथि सूवा हरि बोलै, हरि परताप न जानै॥

जो कबहूँ उड़ि जाई जंगल में, बहुरि न सुरतै आने॥

साची प्रीति विषै माना सूँ, हरि भगतनि सूँ हासी।

कहैं कबोर प्रेम नहीं उपज्यौं, बाँध्यौ जमपुरि जासी॥

2. कबीर के साहित्य पर विचार कीजिए। 10

3. कबीर युगीन सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य पर प्रकाश डालिए। 10

4. "कबीर और तुलसी की सामाजिक चिन्ता में समानता होते हुए भी उनकी समाजोद्धार की उपाय-योजना एकदम भिन्न थी।" इस कथन के मूल आशय को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 10

5. कबीर की कविता में निहित दार्शनिक पक्षों का विवेचन कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×5=10

(क) कबीर की सामाजिक चेतना

(ख) आदिग्रन्थ

(ग) संधा भाषा अथवा उलटबाँसी

(घ) कबीर ग्रन्थावली